अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
१.	प्राक्कथन	2
२.	शोध विषय कि प्रेरणा एवं विषय चयन	4
३.	सामाग्री संकलन सूत्र	5
४.	शोध-कार्य क उद्देश्य	6
५.	विषय का महत्त्व	7
६.	शोध प्रबंध का विभाजन	9
७.	कृतज्ञता ज्ञापन	11
८.	परिशिष्ट	14

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का परिचय उसके साहित्य से उपलब्ध होता है। साहित्य का शाब्दिक अर्थ है सहित या साथ होने की अवस्था एक साथ एकत्रित हुए विचार, समस्त शास्त्र एवं ग्रंथों के समूह को साहित्य (लिटरेचर) की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।साहित्य किसी भी देश के समाज,संस्कृति एवं सभ्यता का अभिन्न अंग होता है। साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है, 1. शिष्ट साहित्य और 2.लोक साहित्य। शिष्ट साहित्य के मुख्यत: दो रूप हैं 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य। लोकसाहित्य को भी शिष्ट साहित्य कि भांति विभाजित किया जा सकता है किंतु लोक साहित्य मुख्यत: गेय रूप में प्राप्त होता है।अत: लोक साहित्य को विद्वानों कला एवं संस्कृति के मानदण्ड के आधार पर पाँच भागों में बाँटा गया है लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोकोत्तियाँ या लोकसुभाषित आदि। लोक साहित्य मौखिक रूप में अधिक प्राप्त होता है। लोक साहित्य का मौखिक रूप में उपलब्ध होना उसकी प्रधानता है। समाज इसकी उपलब्धता तब से है जब से मनुष्य ने धरती पर जन्म लिया है। मानव की प्रवृत्ति है स्वयं को आनंदित करने के लिए मनोरंजन हेतु गीत या किस्सागोई को अपना सहारा बनाता है। हम लोक साहित्य को समय सीमा में नहीं बांध सकते क्योंकि प्रचलित लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, आदि के प्रेरणा श्रोत तो भगवान ही हैं। वैदिक काल के ग्रंथों, पुराणों से प्राप्त ज्ञान को अर्जित कर लोक मानव ने इस लोक साहित्य का सृजन किया है इस विषय में डो. दिनेश्वर प्रसाद ने लिखा है- ''लोक कहानियों की मुख्य विशेषता उसकी सुखान्तता है। आज भारत के विभिन्न प्रदेशों से जो लोक साहित्य प्राप्त हो रहा है, वह सदैव एकसा नहीं रहा होगा समय दर समय उसमें भी विकासशील परिवर्तन आया है। मध्ययुग में ऐतिहासिक लोकनायकों और वीरों की जो कहानियाँ आज प्रचलित है उनसे पहले नहीं रची गयी होंगी शायद''। लोक साहित्य समाज में आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन समय में था।

लोक साहित्य का विस्तार अत्यंत व्यापक है। आम जनता जिस भाषा एवं बोली में अपने ह्रदय से निकले करुणामयी शब्दों से रोती है हँसती है, खेलती है गाती है अपने भावों को प्रकट करती है इन सबको लोक साहित्य के अंतर्गत रखा जा सकता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव जिन सोलह संस्कारों का निवार्ह कर रहा है वे प्राय: हमारे ऋषियों ने जिसका उल्लेख वैदिक काल में किया था। हम उन सभी रीति-रिवाजों का संस्कारों का आज भी निर्वहन कर रहे हैं। लोक साहित्य को विद्वानों ने विविध भागों में विभाजित किया है। लोकगीत की बात करें तो विविध अवसर, तीज-त्यौहार पर मनुष्य लोक गीत के माध्यम से अपने भावों को प्रकट करते हैं।जन्म के समय सोहर के गीत, मुण्डन के गीत, छोछक गीत आदि गाये जाते हैं, ऋतु गीत

बारह मास प्रकृति के आधार पर परिवर्तनशील होते हैं चैत से फागुन तक के लोकगीत गाये बिना आम जनता का हृदय नहीं रहता, श्रमिक गीत में खेती के समय बोआई, निराई, लुनाई, कटाई के गीत गाकर श्रम करते हैं। लोकगीत आम जन समुदाय के हर्ष उल्लास की अनुभूति से परिपूर्ण हैं। किस्सागोई हमें हमारे पूर्वजों से विरासत मिली है। आज भी दादी-नानी की कहानियाँ, गाँव में बड़े-बुजुर्ग शीत ऋतु की कड़ाके की ठंड में अलाव जला कर लोककहानियाँ सुना करते हैं। गाँव में मेले में नट तमाशे नाटक जैसे लोकनाट्य आज भी खेले जाते हैं। लोकभाषा में दैनिक व्यवहार में कई बार मुहावरे कहावतों का प्रयोग देखने को मिलता है। लोकगाथा में भारतवर्ष के वीरों की गाथा उल्लेख भी मिलता है। लोक साहित्य यह मानव के जन्म से मृत्यु तक लोक संस्कृति के साथ अटुट संबंध है, हर स्त्री,पुरुष,बालक,जवान,वृद्ध सभी लोगों की सम्मिलित पूँजी है संपत्ति है, तथा जिसके संरक्षण का दायित्त्व हमारा है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध लोक साहित्य कि विधा लोकगीतों से संबंधित है। मेरे शोध विषय का शीर्षक नारी चेतना के संदर्भ में लोकगीत है। इस शोध प्रबंध में लोक साहित्य एवं लोक साहित्यिक विधाओं पर सत्यता एवं एकरूपता से अन्वेषण कर लेखन कार्य किया गया है। विषय अनुसार शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य नारी चेतना को दर्शाते ब्रज लोक गीत हैं। ब्रज लोकगीतों में नारी कि मनोदशा एवं वेदना का स्वर शब्दमय होकर चेतना के रूप में प्रकट हुआ है।

साहित्य समाज का दर्पण है ठीक उसी प्रकार लोक साहित्य आम जनता के हृदय का दर्पण है। लोक साहित्य आमजनता का वह साहित्य है,जिस साहित्य के माध्यम से आम जन खुद को आनंदित कर अपने जीवन को सुख समृद्ध बनाने का प्रयास करता है। लोक साहित्य का सीधा संबंध सीधे-सच्चे लोकमानव से है जो किसी भी तरह के प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करता यह मौखिक साहित्य के प्रवाह में बहता चलता है। अत: यह कह सकते है कि जब से पृथ्वी पर मानव ने जन्म लिया है तभी से लोक साहित्य भी उसके साथ ही अंकुरित हुआ होगा। लोक साहित्य सदियों से मौखिक परंपरा का अनुसरण करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता चला आया है। कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक साहित्यिक विधाओं का बहुत ही बारीकि के साथ अध्ययन किया है। वे कहते हैं- “चिरकाल से अर्जित ज्ञान राशि का नाम साहित्य है। जो साहित्य साधारण जनता से संबंध रखता है उसे ‘लोक साहित्य’ कहते हैं। जिस प्रकार साधारण जनता का जीवन नागरिक जीवन से भिन्न होता है उसी प्रकार उनका साहित्य भी आदर्श साहित्य से पृथक होता है”। लोक साहित्य को साहित्यिक रूप देने तथा लोक संस्कृति को संझो ने का श्रेय डॉ. सत्येंद्र, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, मोहनलाल मधुकर, श्याम परमार, डॉ.कन्हैयालाल सहगल, डॉ. सूर्य किरण पारीख, रामनरेश त्रिपाठी आदि साहित्यजीवीयों को जाता है।

ब्रज लोक साहित्य यह ब्रजवासियों की लोकानुभव की अमुल्य अभिव्यक्ति है। ब्रज भाषा के लोक साहित्य पर विविध बुद्धिमनीषियों ने शोध कार्य किए हैं उनमें डॉ. सत्येंद्र का नाम सर्वोपरि है। उन्होंने लोक साहित्य पर गहराई से कार्य किया और लोक साहित्य के संरक्षण हेतु कदम भी उठाए हैं। डॉ. सत्येंद्र के अनुसार ‘‘लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है’’। लोक साहित्य को साहित्यकारों ने विविध भागों में विभाजित किया है जो इस प्रकार है लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा,लोकनाट्य, लोक सुभाषित या प्रकीर्ण साहित्य। ठीक इसी प्रकार ब्रज लोक साहित्य को विभाजित कर सह उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

शोध विषय कि प्रेरणा एवं विषय चयन

शोधार्थी को अनुसंधान के विषय का चयन विवेकपूर्ण करना चाहिए। शोध का विषय मौलिक हो तथा उसकी आवृत्ति की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए इसका खास ख्याल शोधार्थी होना चाहिए। प्रस्तुत शोध प्रबंध को शोध के विषय चयन सही प्रक्रिया के अंतर्गत लिया गया है। लोक साहित्य की विविध विधाएं हैं मैंने चयनित विषय को लोकगीतों तक ही सीमित रखा है। ब्रज के लोक साहित्य का परिचय देते हुए ब्रज लोक साहित्य को उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। स्नाकोत्तर (एम.ए.) के दरम्यान लोक साहित्य विधा का अभ्यास किया था तथा विश्वविद्यालय के प्रध्यापकों द्वारा काफी बारीकि से अध्ययन कराया गया था। लोक साहित्य के उदाहरण हमें एकत्रित करने को कहा गया इस कार्य के सम्पन्न होते ही मेरा चित्त में मेरी माता द्वारा कहे गये लोकगीत, लोकोत्तियों पर मेरा ध्यान आकर्षित हुआ और यहीं से मुझे लोक साहित्य पर कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। मेरा जन्मस्थल कासगंज क्षेत्र में स्थित गाँव कमालपुर है। ब्रज भाषा मेरे घर में बोली व व्यवहार में लायी जाती है इसीलिए मेरी मातृभाषा हिंदी के साथ ब्रज भी है। ब्रज भाषा के प्रति प्रेम और लोक साहित्य में रुचि का होना स्वभाविक है। मेरी निर्देशिका प्रोफेसर कल्पना गवली मैडम को मैंने अपनी रुचि के विषय में जानकारी दी उन्होंने मेरी भावानाओं की कदर की और मुझे उचित मार्गदर्शन दिया। मैंने चयनित विषय से संबंधित सामग्री जुटाने का कार्य प्रारंभ किया। विषय को सीमित और शोध प्रबंध के शीर्षक को सुसज्जित करने का श्रेय महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के कला संकाय के हिंदी विभाग की निवृत प्रध्यापक प्रोफेसर शैलजा भारद्वाज को जाता है। जिसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ। शोध के लिए विषय का चुनाव शोधार्थी की इच्छा अनुसार ही होना चाहिए। चयनित

विषय में तन्मयता और संतुलन बनाए रखना शोधार्थी का दायित्त्व है। शोध की विभिन्न पद्धतियों को मद्देनज़र रखते हुए इस शोध प्रबंध में कार्य किया गया है।

इस शोध प्रबंध के अंतर्गत मेरा मुख्य विषय लोकगीत तक सीमित है। अपनी रुचि अनुसार मैंने ब्रज भाषा के लोक साहित्य पर शोध कार्य करने का निश्चय किया और अपनी निर्देशिका द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के आधार पर मैंने अपने शोध प्रबंध का विषय नारी चेतना के संदर्भ में ब्रज लोकगीत चुना। लोकगीतों के विविध रूप ब्रज लोकगीतों में पाए जाते हैं। लोकगीत हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर है। लोकगीतों में मुख्यतः महिलाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आमजन जब किसी अवसर पर आनंदमय होकर लहरा के गा उठे तब वह लोकगीत कहलाता है। ब्रज लोकगीतों की विविधता और बहुलता का प्रमाण बहुत अधिक है। लोकजीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो ब्रज लोकगीतों की परीधि में न आया हो। ब्रज लोकगीतों में संस्कार गीत, तीज-त्यौहार के गीत,शादी-ब्याह के गीत, ऋतु संबंधी गीत, कृषि संबंधित गीत, श्रम गीत,देवी-देवताओं के गीत आदि का समावेश किया जाता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक गीतों में समाज सुधारक गीत भी प्राप्त होते हैं, जिनमें पर्यावरण सुधार और संरक्षण, परिवार नियोजन, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, देश-प्रेम, नारी जागृति, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर प्रचुर मात्रा में लोकगीत देखने को मिलते हैं।

सामाग्री संकलन सूत्र

शोध-कार्य में सामग्री संकलन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चरण है। विषय से संबंधित तथ्यों का संकलन बड़े ही सावधानी एवं सूझ-बूझ से करना करना होता है। सामग्री संकलन के मुख्यत: दो सूत्र हैं 1. प्राथमिक सामग्री 2. द्वितीय सामग्री.

प्राथमिक सामग्री :

शोध कार्य के लिए प्राथमिक सामग्री आधार सामग्री होती है। इसके सहारे शोधर्थी अगले चरण पर बढ़ता है। शोध विषय से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु शोधार्थी विभिन्न स्त्रोत, संसाधन, एवं सामग्री एकत्र करता है। लोक साहित्य का संबंध क्षेत्रीय कार्य से है। बहुत से विद्वानों ने लोकसाहित्य को संग्रहीत कर प्रकाशित किया है। मेरे शोध प्रबंध से संबंधित प्राथमिक सामग्री सर्वेक्षणों, अवलोकनों, प्रश्नावलियों एवं साक्षात्कारों द्वारा संकलित की गई है। लोक साहित्य में सामग्री संकलन जटिल कार्य है। क्षेत्रीय कार्य के दौरान संकलित की गई शोध सामग्री के स्त्रोत को क्षेत्रीय स्त्रोत भी कहा जा सकता है। सामग्री संकलन हेतु

मैंने ब्रज भूमि पर यात्रा की और साक्षात्कार एवं इलेक्ट्रोंनिक साधनों के माध्यम से वोइस रेकोर्डींग कर महत्त्वपूर्ण सामग्री संकलित की है।

द्वितीय सामग्री:

शोध प्रबंध के विषय चयन के बाद सामग्री संकलन कार्य अहम सोपान है। द्वितीय सामग्री उपलब्ध अथवा संकलित सामग्री होती है। इस सामग्री के प्रमुख स्त्रोत हैं- पुस्तकालयों-संग्रहालयों में उपलब्ध संदर्भ ग्रंथ,पत्र-पत्रिकाएं, रिपोर्ट, पुस्तकें आदि। मेरे विषय संबंधित सामग्री महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय स्थित हंसा मेहता पुस्तकालय से प्राप्त हुई। कला संकाय के हिंदी विभाग के सभी प्रध्यापकों ने मुझे पुस्तकें व उचित मार्गदर्शन देकर मेरी सहायता की जिसके लिए मैं सभी की अभारी हूँ। मेरी निर्देशिका प्रोफेसर कल्पना गवली ने मुझे अन्य भाषा के लोक साहित्यकारों से परिचित कराया एवं सामग्री जुटाने में मेरी मदद की। तत्कालिन परिस्थितियों के चलते शोध में सामग्री संकलन जटिल होता है किंतु एक शोधर्थी को निडर एवं सूझ-बूझ के साथ शोध कार्य करना चाहिए सो मैंने किया और सामग्री संकलित की।

शोध-कार्य क उद्देश्य

शोध प्रबंध की रचना क्रम में शोध विषय का उद्देश्य अनिवार्य अंग है। जीवन में किसी भी कार्य पीछे उद्देश्य का होना बेहद जरूरी है बिना उद्देश्य किया जाने वाला कार्य व्यर्थ है। मेरा शोध प्रबंध लोक साहित्य की एक शाखा लोक गीत से संबंधित है। इस विषय पर कार्य करने का मेरा उद्देश्य निम्न बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट हैं-

- लोक साहित्य मौखिक साहित्य है। यह वाचिक परंपरा से संबंधित है अत: मौखिक साहित्य का संकलन कार्य मुश्किल है। मैंने इस शोध प्रबंध में लोकगीतकारों से भेट कर सामग्री संकलन का कार्य सम्पूर्ण किया।

- प्रस्तुत शोध प्रबंध का शीर्षक नारी चेतना के संबंध में ब्रज लोक गीत एक अध्ययन है।इस शोध प्रबंध में लोकगीतों का वर्गीकरण कर संस्कार गीत, शादी-ब्याह के गीत, मौसम एवं माह विशेषक गीत, तीज-त्यौहार के गीत, खेलकूद के गीत, शादी-ब्याह के गीतों में हल्दी,मेहँदी,तेल चढ़ाई, भात गीत आदि गीतों को उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया हैं।

- इस शोध प्रबंध में लोकसाहित्य की प्रत्येक विधा का उदाहरण सहित वर्गीकरण किया है।

- आधुनिक युग में हिंदी गद्य एवं पद्य में नारी विमर्श पर काफी कार्य हो चुका है। विश्वविद्यालायों में लोक साहित्य के प्रति विमुख रवैया देखने को मिलता है। नये विषय और नवीन तथ्यों के आंकलन पर लोक साहित्य खरा नहीं उतरता ऐसी विचारधारा के कारण लोक साहित्य को कम आंका जाता है। मेरा उद्देश्य ऐसी विचारधारा का खंडन करना है। लोकगीत आज भी उतने ही प्रभावशाली है जितने वे प्राचीनकाल में थे।

- ब्रज लोक साहित्य के माध्यम से ब्रज भूमि की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक,धार्मिक गतिविधियों का सर्वांगीय अध्ययन कर विस्तृत विवेचन किया गया है।

- नवीन एवं मौलिक विषय के पैमाने पर ब्रज लोक साहित्य आज भी उतना ही प्रमाणिक है जितना पहले था। इस शोध प्रबंध में अप्रकाशित गीतों को प्रकाशित कर उन्हें संजों ने का प्रयास किया गया है।

विषय का महत्व

चयनित शोध प्रबंध का शीर्षक नारी चेतना से संबंधित ब्रज लोकगीत है। नारी विमर्श पर अबतक दर्जनों शोध प्रबंध प्रकाशित हो चुके हैं। लोक गीतों का सीधा संबंध नारी से होता है। लोकगीतों में महिलाएं अपने जीवन के दुःख-दर्द को गीतों के माध्यम से व्यक्त करती हैं। विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीतों के प्रकार हैं - संस्कार गीत, शादी-ब्याह के गीत, मौसम एवं माह विशेषक गीत, तीज-त्यौहार के गीत, खेलकूद के गीत,आदि का भण्डार है। शादी-ब्याह के गीतों में हल्दी,मेहँदी,तेल चढ़ाई, भात गीत आदि गाये जाते हैं। विदाई के समय जो लोकगीत गाये जाते हैं, जिन्हें सुनकर करूणा से सभी का ह्रदय भर आता है और सबकी आँखों को भीगो देते हैं।

वैदिक काल से ही देखा जाय तो नारी की स्थिति समाज में अति दयनीय रही है।भारतीय समाज सदियों से पितृसत्तात्मक विचारधारा को महत्व दिया जाता है। पितृसत्तात्मक परम्परा ने नारी को अत्याधिक प्रताड़ना दी है। पुरूष की मर्जी के मुताबिक नारी को दोहरी मानसिक पीड़ा से गुजरना पड़ा है। उसका व्यक्तित्व घर की चार दीवारों में ही सीमटकर रह गया है। बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक नारी के

जीवन की संघर्ष यात्रा चलती रहती है। विवाह न होना, श्याम रंग होना आदि समस्याओं से नारी का अस्तित्व जुझता रहा है। विवाह के बाद नारी को ससुराल एवं पति द्वारा प्रताड़ीत किया जाता है। सास द्वारा दी गई पारिवारिक जिम्मेदारीयों को नारी संघर्षशील बनकर निभाती है। कभी दहेज के नाम पर कभी बेटा न जनने के कारण यातानाएं दी जाती है। ऐसी कितनी वेदनाओं का उल्लेख लोक गीतों में मिलता है। त्याग, प्रेम, बलिदान, कुण्ठा, तनाव, भटकाव, आदि समस्याओं का वर्णन लोकगीतों में मिलता है। लोकगीतों को माध्यम बनाकर नारी अपने प्रत्येक भाव को अपनी व्यथा को गाकर व्यक्त करती है। विवाह पश्चात् किस प्रकार ससुराल द्वारा नारी को प्रताड़ित किया जाना, पति का रोजगार की तलाश में विदेश जाना आदि की पीड़ा को गीतों में व्यक्त कर अपने चित्त को कुछ समय के लिए आनंदित कर लेती है।

खेतों में काम करते समय एवं चक्की चलाते समय, आदि श्रमगीतों के माध्यम से अपनी पीड़ा को व्यक्त करती हैं उन गीतों में चेतना है। इसके अतिरिक्त दु:ख-सुख, विरह-वेदना,आदि भावों को इन लोकगीतों में दर्शाया गया है जहाँ वेदना भी है और चेतना भी। नारी अपने प्रत्येक कर्तव्य को एकनिष्ठ होकर निभाती है। परिवार के सभी सदस्यों का ख्याल रखती है पुरे घर को अकेले संभालती है। सभी की सेवा अपनी खुशी से करती है। फिर भी नारी घरेलू हिंसा का शिकार होती है। आज हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं लेकिन समाज में आज भी नारी की दशा जैसी थी वैसी ही बनी हुई है। आज भी महिलाएं हर घर में अपनी ऐसी भयावह परिस्थितियों से जूझ रहीं है। समाज में अभी भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के जानते हुए भी वह ख़मोश है तो इसमे भी उस के संस्कार है। बचपन से नारी को त्याग, बलिदान के पाठ पढ़ाए जाते हैं। वह चाह कर भी खुलकर इस अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती है। कहीं न कहीं उस चेतना को परिणाम नहीं मिल पाया था लेकिन आज भी कई महिलाएं नारी विमर्श पर कार्य कर रहीं हैं। बदलाव लाने का सफल प्रयास जारी है। ब्रज लोकगीतों में ऐसे सामजिक विषय भी चेतना मय स्वर के साथ गूंज रहे हैं। ब्रज लोकगीतों में अति प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक के गीतों का सागर है। विभिन्न अवसरों पर लोकगीत आज भी गाए जाते हैं। इन सभी गीतों में नारी की चेतना भी साफ़ मुखरित हुई है।

यहाँ हम देख सकते है कि नारी चेतना है लेकिन किसी कारणवश वह उभर कर आ नहीं पाई है। यदि हम अपनी सोच को बदलने का एक प्रयास करें तो यकीनन बदलाव हो सकता है। जिस दिन नारी और पुरुष के बीच की आधिकारिक भिन्नता मिटेगी। नारी को भी पुरूष के समान अधिकार और आदर मिलेगा, उस दिन समाज वास्तव में बदलेगा और महिलाएं सम्मान से अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

शोध प्रबंध का विभाजन

शोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है,जो निम्नलिखित हैं-

अध्याय १

अ.) 'ब्रज' का परिचय एवं क्षेत्र निर्धारण

ब.) ब्रज के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य

प्रस्तुत शोध प्रबंध को कुल चार अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय को अ. और ब. भागों में बाटाँ गया है। अ. के अंतर्गत संबंधित शीर्षक के 'ब्रज' शब्द की व्युत्पत्ति, नामकरण की विस्तृत चर्चा की गई है, साथ ही प्रमाणिक पुस्तकोंब में दिए गये संदर्भों के आधार पर 'ब्रज' की भौगोलिक सीमाओं को मानचित्र सहित प्रस्तुत किया गया है। 'ब्रज' की बोलियाँ तथा उपबोलियाँ आदि को भी समिहित किया गया है।

प्रथम अध्याय के ब. भाग में ब्रज भूमि की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य को दिखाया गया है। ब्रज भूमि कृष्ण भगवान की पावन भूमि है यहां के कण-कण में कृष्ण भक्ति समायी है। ब्रज की ऐतिहासिकता को समय सीमा में नहीं दर्शाया गया है लेकिन मुगल कालीन परिस्तिथियों का वर्णन ग्रंथों के अनुरूप पर किया गया है। सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य के अंतर्गत ब्रज के तीज-त्यौहार, मेले, पर्व आदि को दिखाने के बाद ब्रज में धार्मिक गतिविधियों के बढ़ानेवाले अष्टछाप के कवि वल्लभाचार्य एवं उनके शिष्यों के योगदान को बताया गया है । इस पंथ के अन्य अनुयायीयों का भी संक्षिप्त चित्रण किया गया है। अंत में निष्कर्ष के तहत पूरे अध्याय का सार दिया गया है।

अध्याय २

अ.) लोकसाहित्य का परिचय एवं वर्गीकरण

ब.) ब्रज लोकसाहित्य का स्वरूप एवं विकास

प्रस्तुत अध्याय को दो भागों में बाँटा गया है। अ. भाग का शीर्षक लोक साहित्य का परिचय एवं वर्गीकरण है। इस भाग के अधीन लोक साहित्य की आवधारणा और विभाजन, लोक साहित्य की संस्कति एवं परंपरा जैसे बिंदुओं पर चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय के प्रथम भाग में लोक साहित्य की विभिन्न विधाएं

लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकसुभाषित आदि का परिचय और उदाहरण सहित लेखन कार्य किया गया है।

द्वितीय अध्याय के ब. भाग में ब्रज भाषा में रचित लोक साहित्य के स्वरूप और विकास की चर्चा की गई है। लोकसाहित्य की भांति ब्रज लोक साहित्य का विभाजन कर प्रत्येक विधा का उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है। इस शोध प्रबंध का मुख्य विषय लोकगीत है, इसलिए ब्रज लोकगीतों को केंद्र में रखकर अध्ययन किया गया है। लोकगीतों को विभाजित कर उन्हें उदाहरण सहित दिखाया गया है। अंत में निष्कर्ष के अंदर समग्र अध्याय का सार दिया गया है।

अध्याय ३

नारी चेतना के संदर्भ में ब्रज लोकगीत

तृतीय अध्याय में मैंने नारी चेतना से तात्पर्य पर विवेचन किया गया है। इस अध्याय के अंतर्गत ब्रज लोकगीतों में नारी की पीड़ा, वेदना एवं यातनाओं से लिप्त गीतों को दिखाया गया है। ब्रज लोकगीत और नारी, ब्रज लोकगीतों में चेतना का स्वर, ब्रज लोकगीतों में नारी अस्मिता का बोध आदि बिंदुओं से संबंधित गीतों का संकलन कर प्रकाशित किया गया है। अंत में निष्कर्ष में समग्र अध्याय का सारांश दिया गया है।

अध्याय ४

उपसंहार

अंत में उपसंहार के अंतर्गत समग्र शोध प्रबंध का अवलोकन कर लोक साहित्य को नई दिशा देने का प्रयास किया गया है। आधुनिक युग में लोक साहित्य का समाज में स्थान, लोक जीवन शैली आदि बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। आज के युग में नवीन विषयों की श्रेणी में लोक साहित्य उतना ही प्रभावशाली है जितने के अन्य विषय। साक्षात्कार एवं संकलन के साथ अंत में सूचियों में ग्रंथ सूचि, संदर्भ ग्रंथ सूचि को दिया गया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

कृतज्ञता ज्ञापन एक औपचारिकता ही हो इसकी अनिवार्यता को नज़रअंदाज नहीं कर सकते है। भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में अपनी विशिष्टता एवं सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जानी जाती है। कृतज्ञता ज्ञापन का संस्कार भी हमें हमारे पूर्वजों से मिला है। इसी संस्कृति की परंपरा का निर्वहन करते हुए मेरे शोध प्रबंध को सम्पूर्ण करने में सहायता करनेवाले व्यक्तियों, संस्थाओं, पुस्तकालयों, विभागों का मैं आभार व्यक्त करती हूँ। सर्वप्रथम मैं अपने ईष्ट अपने ईश्वर को नतमस्तक होकर प्रणाम करती हूँ। मेरे ईश्वर ने मुझे इतनी बुध्दि और प्रेरणा प्रदान की के मैं उनके आशीर्वाद और नेतृत्व से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने जा रही हूँ। मुझे शिक्षण क्षेत्र में इतनी ऊँचाईयों तक पहुँचाने एवं शिक्षा की इस सर्वश्रेष्ठ उपाधि प्राप्त करने का सौभाग्य मिला यह मेरे खुदा की असीम कृपा का नतीजा है। मैं ब्रज लोकसाहित्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। मुझे ब्रज लोकगीतों के संकलन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसके लिए मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पूर्ण होने जा रहा है यह मेरे लिए परम हर्ष और आनंद की बात है। कृतज्ञता ज्ञापन की आगे की कड़ी में अब मैं अपने गुरुजनों का धन्यवाद व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग, समय पर सुझाव, एवं अशीर्वाद से आज मैं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने जा रहीं हूँ। इस क्रम में सर्वप्रथम मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा के कला संकाय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष एवं प्रध्यापक गण का आभार व्यक्त करती हूँ। मेरी आदरणीय गुरु एवं निर्देशिका प्रोफेसर कल्पना गवली जी का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। उन्होंने मेरी रुचि को आकार देकर मुझे लोक साहित्य पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। तात्कालिन समय में विश्वविद्यालयों में लोक साहित्य को लेकर उदासीनता दिखाई पड़ती है। शायद लोक साहित्य को नवीन एवं आधुनिक विषय की श्रेणी में कम आँका जाता है। आधुनिक युग में लोक साहित्य की प्रासंगिकता को सिद्ध करना मेरा उद्देश्य है। मेरी अध्यापिका तथा निर्देशिका ने तमाम रुढ़िवादी विचारधाराओं का खंडन कर मुझे उचित दिशा-निर्देश देकर मेरे शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में मेरी सहायता की जिसके लिए मैं आजीवन उनकी आभारी रहूँगी। मेरे शोध कार्य में विभाग के अध्यापक गण ने समय दर समय मुझे विषय संबंधी सामग्री, एवं कुशल मार्गदर्शन देकर मेरी सहायता की जिसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ। जिनमें मैं हिंदी विभाग की पूर्व प्रोफेसर शैलजा भारद्वाज, प्रोफेसर शन्नो पाण्डेय, डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय, डॉ. अनीता शुक्ला, डॉ. मनीषा ठक्कर, प्रोफेसर दक्षा मिस्त्री, प्रोफेसर कनुभाई निनामा, डॉ अजहर ढ़ेरीवाला एवं अन्य सभी प्रध्यापक गण को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। आप सभी गुरुजनों के आशीर्वाद से यह शोध प्रबंध पूर्ण होने जा रहा है।

जीवन में लक्ष्य नहीं वो जीवन व्यर्थ है। मानव अस्तित्व के लिए लक्ष्य और आकाक्षां जीवन के अहम मूल्य है। मैं अपने जीवन मे अथक परिश्रम कर शिक्षण क्षेत्र की इतनी ऊंचाई तक पहुंच सकी हूँ।प्रस्तुत क्रम में अब मैं अपने परिवार के सभी सदस्यों एवं मित्रों को कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। सर्वप्रथम मैं अपने परमपुज्य माता-पिता का आभार व्यक्त करती हूँ। मेरे पिता साबिर खान एवं माता फिरदोस बेगम के सहयोगात्मक आचरण के कारण मैं उन्हीं का स्वप्न साकार करने जा रही हूँ। माता- पिता अपने बच्चों के जनने से उनके जीवन को सफल बनाने तक अनेकों बलिदान देते हैं। जिसके लिए मैं आजीवन इनकी ऋणी रहूँगी। अपना पूरा जीवन इनके चरणों में समर्पित करके भी मैं यह ऋण नहीं चुका पाऊंगी। मेरे परिवार के सदस्यों में मैं अपने भाईयों अनस खान, जैद खान तथा मेरी बहन निशा खान ने मेरी इस संघर्षशील यात्रा में कवच की भांति मेरा सहयोग दिया तथा मेरी भाभी शाहिस्ता खान और जीजा मुस्ताक खान की मैं शुक्रगुजार हुं। आगे इस क्रम में मैं अपने पति एवं ससुराल पक्ष की कृतज्ञाति हूँ। शोध कार्य के दौरान विवाह होना और पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। मेरे पति तारीफ खान ने विषम परिस्तिथियों में मेरा सहयोग दिया जिसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ। मैं अपनी पुत्री आयात खान का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिसने माता के बिना समय बिताया।शोध कार्य में सामग्री संकलन हेतु क्षेत्रिय कार्य करना होता है और शिशु को घर पर छोड़कर कई बार मुझे क्षेत्र में उतरना पड़ा मेरी नज़र में यह एक कठिन क्षण था जिसमें आयत ने मेरा साथ दिया। मेरे ससुर कैप्टन हुसैनआलम खान और सास मुमताज बानों की मैं आभारी हूँ जिन्होंने समाज की रुढ़िवादी सोच को बदल कर अपनी बहु को अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में मदद की। मैं अपने देवर लैफ्टिनैंट कमांडर शहबाज खान और देवरानी आएशा खान का साथ ही नंद रुकसाना खान को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। मेरे सह शोधार्थी मित्रों में सुमन सरोज, बरखा वल्वी, मिथिलेश, कृष्णा, विनोद, पिनल आदि के स्नेहपूर्ण सहयोग ने मुझे सामग्री मुहैया कराने में समय-समय पर मदद की और सही पथप्रदर्शित भी किया है। जिसके लिए मैं आप सभी की कृतज्ञाति हूँ।

अंत में मैं सबसे महत्वपूर्ण हमारी संस्था महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा को धन्यावाद देना चाहती हूँ। विश्वविद्यालय ने मेरे शोध प्रस्ताव को स्वीकार कर मुझे प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति दी जिसके लिए मैं संस्था की आभारी हूँ। विश्वविद्यालय के हंसा मेहता पुस्तकालय को आभार देती हूँ जिनकी सहायता से मुझे शोध संबंधी सामग्री, प्राचीन पुस्तकें, पत्रिकाएं उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान की। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरी सहायता के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। प्रस्तुत शोध प्रबंध के प्रयास में सभी महानुभवों की मदद से इस सफलता की अनुभूति हुई है। अखिर में अब मैं शोध प्रबंध को विद्वानों के समक्ष रखते हुए क्षमायाचना करना चाहूँगी शोध कार्य में कुछ न कुछ कमियां-खामियां अवश्य रह गई होगी यथासंभव सुधार व परिश्रम करने बाद भी कोई न कोई त्रुटि रह गई हो तो रेखांकित कर सुधारने का प्रयास

करुंगी । क्योंकि ज्ञान अनंत है और ज्ञान के क्षेत्र विस्तार में मनन-चिंतन सुधार की संभानाएं अवश्य होती है।

इस शोध प्रबंध से मेरा उद्देश्य है कि मैं 'ब्रज लोकगीतों के माध्यम से नारी की व्यथा-कथा, वेदना और सामाजिक अस्पृश्यता को खंडित करते गीतों को समाज के समक्ष रखकर बदलाव का एक तुच्छ प्रयास किया है। आधुनिक युग में नारी चेतना के गीतों की प्रासंगिकता को इस अनुसंधान से सिद्ध करने का जतन किया है। लोक साहित्य के संरक्षण हेतु कुछ अप्रकाशित सामाग्री को मैंने संकलित किया है। इस परियोजना में ब्रज संस्कृति के सभी मूलभूत तत्त्वों का समावेश किया है। एक व्यापक और नवीन दृष्टिकोण के मद्देनज़र नारी चेतना से संबंधित ब्रज लोकगीतों को प्रस्तुत किया है। तात्कालीन समय यदि ब्रज की सांस्कृतिक विरासत के मूल्यों को समझने या अन्य जानकारी के लिए यह शोध प्रबंध उपयोगी साबित हुआ तो मैं खुद को कृतकृत्य समझूँगी।

यह शोध प्रबंध अनुभव, भावनाएं, विचारों के दुरुह मंथन का परिणाम है। जो अब सम्पूर्ण होने जा रहा है। मेरा विनम्र प्रयास है कि अनुसंधान के कार्य में किंचित त्रुटियां भी कदाचित् रह गई हो उम्मीद करती हूँ महानुभाव विद्वान इसे तुच्छ मानकर इस शोध प्रबंध को स्वीकृति देंगे। अब अंत में अपनी गुरु एवं निर्देशिका को साष्टांग दण्डवत प्रणाम करती हूँ।

स्थल: बड़ौदा

दिनांक:

शोध-निर्देशक **अनुसंधित्सु**

प्रो. कल्पना गवली **सायमा अकरब साबिर खान**

परिशिष्ट

1.आधार ग्रंथ सूचि

2.संदर्भ ग्रंथ सूचि

3.पत्र-पत्रिकाएँ एवं कोश

क्रम	रचना का नाम	लेखक	प्रकाशन
1.	हिंदी साहित्य का इतिहास	रामचंद्र शुक्ल	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं 19वाँ संवत 2054 वि.
2.	ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन	डॉ. सत्येंद्र	साहित्य रत्न भण्डार, आगरा संस्करण 1947 ई.
3.	ब्रज साहित्य का इतिहास	डॉ. सत्येंद्र	भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद सं. 2024 वि.
4.	ब्रज लोक-संस्कृति	डॉ. सत्येंद्र	ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, सं 2005 वि.
5.	लोकसाहित्य विज्ञान	डॉ. सत्येंद्र	शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, प्राइवेट लिमिटेड, आगरा. प्रथम संस्करण, आगरा
6.	हिंदी साहित्य कि भूमिका	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	हिंदी ग्रंथ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई- तीसरी आवृत्ति. 1948 ई.
7.	भारत का भाषा सर्वेक्षण	ले. स्व. सर जार्ज ग्रिर्यसन अनु. उदयनारायण तिवारी	खण्ड 1, भाग 1, 1 मई 1967.
8.	हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास (षोडश भाग) हिंदी का लोकसाहित्य	सं. महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं 19वाँ संवत 2017 वि.

9.	ब्रजभाषा	धीरेन्द्र वर्मा	हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद सन् 1954
10.	सुर-साहित्य में लोक-संस्कृति	आद्याप्रसाद त्रिपाठी	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1967 प्रथम संस्करण
11.	लोकसाहित्य की भूमिका	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद. 1956 ई.सवीं प्रथम संस्करण
12.	लोकसाहित्य विमर्श	डॉ. स्वर्णलता	चम्पालाल रीका एण्ड कम्पनी, किताब महल, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 प्रथम संस्करण 26 जनवरी 1979
13.	ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास	प्रभुदयाल मित्तल	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. प्रथम संस्करण, 1966 ई.
14.	भोजपुरी ग्राम-गीत	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. नई दिल्ली,
15.	भोजपुरी ग्राम-गीत	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,संस्करण 1999 ई.
16.	हिंदी प्रदेश के लोकगीत	डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	साहित्य भवन, इलाहाबाद,सन् 1960 ई.
17.	मुस्लिम लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन	डॉ. इरशाद अली	अनुभव प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं. सन् 1985 ई.
18.	भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश (भाग दो)	डॉ. रामविलास शर्मा	किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, सं. प्र. सन् 2006 ई.
19.	औरत के लिए औरत	नासिरा शर्मा	सामयिक प्रकाशन,दरियागंज, दिल्ली, सं. प्र. सन् 2007 ई.
20.	बंसरी (ब्रज लोकगीत) दो खण्ड	पवित्रा सुहृद	ब्रज प्रदेश प्रकाशन, प्रदर्शिनी मार्ग, अलीगढ़. प्र. सं. सन् 1962 ई.

21.	लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन	डॉ. कुलदीप	प्रगति प्रकाशन, आगरा, सं.प्र. सन् 1972 ई.
22.	ब्रज साहित्य एवं लोकगीत परम्परा	डॉ. सुनीति आचार्य	चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर प्र. सं. सन् 2010
23.	ब्रज लोकसहित्य नव चिंतन	डॉ. शेफाली चतुर्वेदी	कल्पना प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं.सन् 2011
24.	स्त्री अध्ययन की बुनियाद	प्रमीला के.पी.	राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली. प्र. सं सन् 2015 ई.
25.	स्त्री विमर्श: साहित्यिक और व्यवहारिक संदर्भ	डॉ. करुणा उमरे	अमन प्रकाशन, रामबाग, कानपुर. प्र. सं सन् 2009 ई.
26.	स्त्री विमर्श	रमणिका गुप्ता	शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं सन् 2007 ई.
27.	ब्रज लोकसाहित्य में लोक-चेतना और जीवन दर्शन	डॉ. कैलाशचंद्र अग्रवाल	चिन्मय प्रकाशन, मोतीलाल नेहरु रोड, आगरा, प्र. सं सन् 1989 ई.
28.	आलोचना की सामजिकता	डॉ. मैनेजर पाण्डेय	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,सन् 2005 ई.
29.	ब्रज लोक वैभव	सं. मोहनलाल मधुकर	
30.	नारी- विमर्श: दशा और दिशा	सं. डॉ. फिरोज अहमद, डॉ. शगुफ्ता नियाज़	आकाश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, गाजियाबाद, प्र. सं. सन् 2010 ई.

शब्द कोश

1. लोक भारती प्रमाणिक हिंदी कोश — संपादक: रामचंद्र वर्मा
2. हिंदी शब्द सागर भाग-8 — संपादक: रामचंद्र वर्मा
3. हिंदी साहित्य कोश — संपादक: धीरेंद्र वर्मा
4. मानविकी पारिभाषिक कोश — संपादक: डॉ. नगेंद्र
5. हिंदी साहित्य कोश — संपादक: डॉ. आनंद प्रकाश दिक्षित

पत्र-पत्रिकाएं

1. ब्रज गरिमा
2. भाषा
3. आजकल
4. नया ज्ञानोदय
5. ब्रज भारती
6. जनकृति अंतराराष्ट्रीय

इंटरनेट वेबसाईट्स

1. www.google.com
2. www.wikipedia.com
3. www.epustakalay.com
4. www.rajkamalbooks.com
5. www.amarkosh.com
6. www.hindinama.com